CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

शोध-पत्र

Received 11.02.2023 Reviewed 07.03.2023 Accepted 29.03.2023

हिन्दी प्रयोगवादी प्रथम तार सप्तक के कवियों का योगदान;संक्षिप्त सार

* **डॉ. पूरणमल वर्मा**

मुख्य शब्द – *काव्यधारा, तारसप्तक आदि.*

हिन्दी साहित्य की प्राचीन लेखन परम्परा के साथ साथ आधुनिक काव्य में लेखन विधा समृधशाली परम्परा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। स्वातन्त्रयोन्तर हिन्दी में इन्हीं कवियों ने अपनी सृजन शीलता का परिचय दिया है। ''तारसप्तक'' सात कवियों का समूह है। 1943 अक्षेटा द्वारा प्रकाशित तारसप्तक नवीन काव्यधारा को नई ऊंचाईयों पर आरूढ़ करने का सार्थक प्रयास कहना समिचिन होगा। भावी पीढ़ी को आगे बढ़ाने व हिन्दी काव्य को अग्र श्रेणी पर लाने में अहं भूमिका कवि की रूचि, सामर्थ्य तथा मानसिक स्थिति के अनुसार कवि गण एक मंच पर आने को आतुर होने लगें । यह सदीर्घ परम्परा का प्रांरभ हुआ । तारसप्तक को एक परिवार कहें तो उचित होगा।

''यह सिद्धांत रूप में मान लिया गया कि योजना का मूलाधार सहयोग होगा। चन्दा एकत्रित कर इतना धन उगाहा जायेगा कि कागज का मूल्य चुकाया जा सके।'' छपाई के लिए किसी प्रेस का सहयोग मांगा जायेगा जो बिक्री की प्रतीक्षा करें या चुकाई में छपाई की प्रतियां ले ले, इस छवि से ''तारसप्तक'' परिवार की नीव लगाई गई थी । धीरे-धीरे विद्वानों ने परस्पर जुडाव प्रारंभ किया और एक चैन की भांति पक्तिबंध जुड़ते गये। इसको आगे बढ़ाने में आक्षेय की विचार धारा श्लाघनीय रही। सहयोग की भावना को अज्ञेय ने कहा- इसकी बुनियाद संयोग पर खड़ी हुई तब उसकी कमी की शिकायत करना उचित नहीं होगा। वह हम लोगों की आपस की बाते हैं। सप्तक के लिए सहयोग का इतना प्रमाण काफी है कि पुस्तक छपकर उसके सामने है। इन कवियों का मूल ध्येय - सफेद पोष, शोषण करने वाले के विरूद्ध आवाज उठाकर शोषित, पीड़ित, वंचित एवमं दलितों के साथ होने वाले भेद-भाव को उजागर कर भूख से पीड़ित व्यक्ति की व्यथा को आमजन तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया है। ''तारसप्तक'' में संग्रहित सात कवियों के कारण ही तारसप्तक नाम रखा गया । तारसप्तक के कवि किसी दल संघ गुट आदि से परित या प्रचारक न होकर राहों के अन्वेषी कवि थे अर्थात वे राही कवि थे। उनकी विभिन्नता को लेकर प्रश्नोत्तरी हुई । सर्वमान्य एवं सर्वमान्य मौलिक तत्वों को लेकर भिन्नता है । उनकी काव्य प्रेरणा उनके एक सूत्र में बांधने में समर्थ होने के कारण वे राहों के अन्वेषी कवि कहलाये । भाव एवं भावामि व्यक्ति के क्षेत्र में किये गये नवीन प्रयोग आगे चलकर कवियों की काव्य सृजनशीलता का उदाहरण बनकर उभरे हैं।

अज्ञेय द्वारा सम्पादित तीन तारसप्तक हैं जिनमें **प्रथम तारसप्तक** के कवियों का नाम इस प्रकार है -

1. गजानन माधव मुक्तिबोध 2. नैमीचन्द जैन, 3. भारतभूषण अग्रवाल, 4. गिरिजा कुमार माथुर , 5.प्रभाकर माचवे , 6. रामविलास शर्मा, 7. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

'अज्ञेय ' के सम्पदाकत्व में तीनों तार सप्तकों का प्रकाशन हुआ जिनमें प्रथम सप्तक के कवियों का विश्लेषण क्रमवार प्रस्तुत है।

(1) गजानन माधव मुक्तिबोध:- तारसप्तक के कवियों में अग्रणी मुक्ति बोध जटिल एवमं संदेवनशील व्यक्तित्व के धनी थी । तारसप्तक की भूमिका में स्पष्ट भी कर दिया है – यहां यह स्वीकार करने में मुझे मानसिक द्वंद मेरे मस्तिष्क में बद्दमुल है । यह अनुभव मैं निकटता से अनुभव करता हूं कि जिस क्षैत्र में मैं हूं वह स्वयं अपूर्ण है, और अशान्ति मन के अन्दर घर किए रहती है।

मन सब परिस्थितियों के पीछे द्वितीय महायुद्ध से उत्पन्न सामाजिक, राजनायिक समस्याओं या परिस्थितियों के कारण, क्रमशः उभरते हुए नए मूल्यों तथा बौद्धिक आस्थाओं से सम्बन्धित था। कवि इस सत्य को स्वीकार करते है। आत्मनिरीक्षण द्वारा अभिव्यक्ति और शब्दगत जडता को लचीला बनाया जा सकता है। इस संदर्भ में मुक्तिबोध की एक नई खोज करना सही होगा। इनकी कविताओं में तीव्र आत्मसंघर्ष, यांत्रिकता के विरोध में शालीन आक्रोश विवेचनात्मक संवेदना और विश्व संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति संवेदना के उदात्त रूप का मिश्रित अनुभव होता है। इनकी सृजनशीलता के व्यापक मायने व्यक्तित्व छास लघुता संघर्ष, निराशा मनोमग्नता, एकालाप आदि की प्रतिपुष्टि स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। आज के मानव की व्यक्तित्व हीनता को लेकर कवि की दृष्टि में परम्परित मूल्य परिवर्तित हो गए है उदहारण देखिए:-

"दब चुकी जो मर चुकी है आत्मा

खत्म जो हो गई आकांक्षा

व्यक्ति में व्यक्तित्व के खण्डहर

गन कर उठते उसी के गीत ।"

सत्रांस मय घुटन एवम भय की स्थिति आज के व्यक्ति को और भयावह बनाती है, अनिश्चय, वैयाक्तिता, क्षणभंगुरता के साथ - साथ जीजीविषा की भावना भी समसामयिक प्रवृत्ति है । संक्रमित पारम्परिक मूल्यों की बढ़ती स्थिति से कवि चिंतित है। कवि ने बौद्विकता को प्राण स्वरूप माना है । इनके काव्य में रोमांटिक की अपेक्षा यथार्थ बोध दृष्टिगत है । इस प्रकार यथार्थ की स्वीकारोक्ति झलकती है।

2. नेमीचंद जैन:- कवि ने कविताओं में प्रगतिचेतना से जुडी विसंगतियों पर प्रहार किया है, जो सामाजिक विषमता को प्रकट करता है। कवि समानता की भावना की कामना करता है।

"वैषम्य श्रृंखलाऐं होगी सब चूर चूर

उग रही स्वर्ण रेखाऐं समता से सुदूर

वह आज मिटा देगा जीवन से वृथा दमन

होगा उस पल में ही नवयुग का शुंभारंभ।''

नेमीचन्द की कविताओं में संस्कार और विवेक का द्वंद है । कवि की कविताओं में समस्या को लेकर आत्मरस होने की चाह से परखने की प्रवृत्ति ही कविताओं में कवि की आत्मरस होने की चाह दृष्टिगोचर होती है।

मैं एकाकी

मेरे आगे ढ़ेढ़ा- मेढ़ा भिखरा फेला है ।

अनन्तपंथ अब भी बाकी बिना तुम्हारे

इस बसंत रजनी की इघ भरी छाया में

चला जा रहा हूं मैं पग – पग

बिना विचारे बिना सहारे ।

श्रम विभाजन के कारण कवि, सामाजिक कर्तव्य से परे न रहकर उसे पूरा करने को उद्धत है, या तत्पर है। वास्तविकता की चोट से बच नहीं पाता है तथा स्वयं धीरे-धीरे अपनी खोल में सिमटता दिखाई पड़ता है। आंतरिक द्वंद उसे समेट लेता है। जिजिविषा मानवीय मृत्युबोध से परे नहीं है किन्तु इस यथार्थ को स्वीकार करना होगा। कवि के सौन्दर्यबोध में कहीं-कहीं छायावादी परम्परा के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। अनजाने चुप-चाप और डूबती संध्या ऐसी कविताऐं है जिनमें सौन्दर्य बोध दिखाई देता है, देखिए-

''तुम्हारे सहज स्नेह का सब गीलापन

बिखर-बिखर आता है-

किस रजनीगन्धा के मद से सदा लबालब

भरे हुए उन चंचल नयनों के उपर से

हय-हय देती व केश हटीले''

कवि का परम्परा के शुद्धिकरण में विश्वास है'' जिस दिन व्यक्ति कवि सचेष्ट भाव से इस युगों पुराने संस्कारगत आंतरिक विरोध को सुलझा कर अपनी चेतना को पूर्ण रूप् से समाजिक बना सकेगा, उसी दिन कविता फिर अपने प्रकृट रूप् में उभर उठेगी । कवि का आग्रह परम्परित शुद्धिकरण की बात करते हुए मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का है ।

3. भारत भूषण अग्रवाल:- प्रस्तुत कवि की काव्यचेतना की अभिव्यक्ति साम्यवाद से आसक्ति और विरूक्ति से प्रभावित प्रतीत होती है । लोगों ने उन्हें कम्युनिस्ट कहा तब 'तारसप्तक' के वक्तव्य में स्पष्ट किया -''मैं कम्युनिस्ट नहीं'' मेरे जीवन के निजी अनुभवों को व्यक्त कर रहा हूं जिसका माध्यम कविता चुना ''मैं अपने अनुभव से मैं इसलिए यह बात जोर देकर कहना

चाहता हूं कि कम से कम मेरी कविता ने मुझे भावों का उत्थान नहीं दिया, न उसने मेरे हृदय का परिष्कार किया । दूषित समाज ने मुझे जो असामाजिक कमजोरियां और गलित स्वार्थ दान में दिए मेरी कविता ने इन्ही की पीठ ठोंकी । संसार को सच्चा मानकर उसमें कर्म करना क्योंकि वास्तविक क्षमता और सामर्थ्य को अपेक्षा रखता है, इसीलिए मैंन कविताएं लिखकर मानों स्वप्न में अपनी अभिलाषाऐं पूरी की और संसार को मिथ्या सिद्ध किया । कर्म से पलायन ही मेरी कविताओं का स्पन्द रहा । व्यक्तित्व के सारे डंक जो दूसरों को काटते है समाज में रहने-सहने से टूट जाते है, लेकिन इस पलायन का फल यह हुआ कि मैंने उन्हीं के विष को अमृत समझा । आज का हिन्दी कवि इतना दम्भी , अकर्मण्य और असामाजिक व्यक्ति क्यों होता है । यह मुझे अच्छी तरह मालूम हो गया है ।

कई सर्वहारा वर्ग की मार्क्सवादी विचारधार जो कि प्रगतिवादी है प्रबल भावना से मानते हैं । व्यक्तित्व ह्रास, दोगलापन, आस्था, अनास्था, मृत्युबोध की जिजीविषा आदि ने मानव मूल्यों का पतन कर उसे हासिये पर खड़ा कर दिया है जिसके प्रति कवि की संवेदना है । कवि ने जीवन के यथार्थ को भोगा, जांचा तथा परखा है तभी तीक्ष्ण व्यंग्योक्ति के माध्यम से उभारने का विनम्र प्रयास करता है । वह गांधीवादी विचारों चुटकियाँ भरते हुए कह देता है ।

खाना खाकर गर्म कमरे में बिस्तर पर लेटा

सोच रहा था मैं मन ही मन हिटलर बैठा

बडा मूर्ख है, जो लड़ता है तुच्छ मिट्टी के कारण

क्षण भगुंर ही तो है रे । यह सब वैभव धन ।

अन्त लगेगा हाथ न कुछ, दो दिन का मेला

लिखूं एक खत, हो जा गांधी जी का चेला ।

कवि नयी राहों के अन्वेषी है न किसी प्रकार के वाद से ग्रसित हों कवि ने पुरातन रूढ़िवादी परम्पराओं को लांघकर त्वरित गति से बढ़ने की प्रेरणा देते है । ये पुरातन और नवीनतम परम्पराओं के मध्य पुल का कार्य करते है अर्थात दोनों विचारधाराओं का समागम कर नवीन विचारधारा को प्रतिपादित करने या अन्वेषण करने का प्रयास कर रहे है ।

4. गिरिजा कुमार माथुर:- छायावादी विचारधारा की अमूर्त प्रेमाभिव्यक्ति और सौन्दर्यमयी चेतना से पर होकर उत्तर छायावादी काव्य की मूर्त अभिव्यक्ति से सम्बन्ध रखने वाली कविताएं लिखी है। रचनाओं की प्रारंभिकता प्रणय, प्रकृति प्रेम पर्याय देखा जा सकता है। रोमानीयतता का समावेश यत्र-तत्र स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इतनी ही नहीं कि कवि प्रकृतिवादी हों उन्होंने सामाजिक जीवन को अग्रसर गति प्रदान करने हेतु आस्था का स्वर भी प्रकट किया। महानगरीथ बोध, यांत्रिकता, व्यस्तता, निराशा, कुण्ठा, घुटन, त्रासदी, वैमनस्य, आदि मध्यम वर्गीय युग बोध से अनुप्राणित होकर कवि ने सृजन किया। माथुर ने तकनीकी पर, विषय वस्तु की अपेक्षा अधिक ध्यान दिया । उन्होंने बहुरंगी प्रकृति के उपमानों, नई–नई ध्वनियों तथा नये-नये प्रयोगों का प्रभाव कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया। इनकी प्रयोग धर्मीता कविताओं में नये-नये प्रयोग दर्शाती है। भाव पक्ष के साथ कलापक्ष में भाषा-शैली की फुहार मानों अलंकारिकता की गुंजन करती विविध बिम्बो को

सादृश्य उन्हें काव्य के माध्यम से रूपांतर करते हैं उनका भावबोध सामयिक की अपेक्षा सांस्कृतिक धरातल पर यथार्थ स्वरूप प्रतीत दिखाई देता है।

'धूप में धान' "शिलापंख चमकीले" कृतियों के माध्यम से कवि की धारणा में नयीकविता की विविध समस्या एवं समाधान की चर्चा की है । कवि प्रगतिवाद के दिखावे की जगह भाषा-शिल्प व बिम्बों के माध्यम में संदेश देता है। कवि मानवीयता, सामाजिक न्याय तथा भावी जीवन के भविष्य को लेकर चिन्तित है।

5. डॉ. प्रभाकर माचवे:- कवि छायावादी एवम प्रगतिवादी विचारधाराओं की अतिरंजना से मुक्त है। छायावाद व प्रगतिवाद में फंतासियों का आधिक्य प्रभावित करता दिखाई देता है। कवि के काव्य सृजन में समाजवादी यथार्थ की भावना नव प्रयोगशीलता का अगला बिन्दु है। साधारण-से साधारण व्यक्ति की भावना को समझने का प्रयास कवि की उदारता का प्रतीक है। जो एक अखबार बेचने वाले का असाधारण चित्रण दृश्य है।

"वह एक मैला सा कुर्ता पहने बेच रहा अखबार"

अर्जुन स्वराज जन्मूमि, आज अधिकार

दो पैसे या फिर चार-चार ।

कवि निम्न व मध्यम वर्ग की वेदनानुभूति से भी सुपरिचित है ।

नोन तेल लकड़ी की फिक्र में लगे धुन से

मकड़ी के जाले से कोलहु के बैल से ।

मकां नहीं रहने को- फिर भी ये धुन से

गन्दे अंधियारें और बदबू-भरे दड़बों में

जनते है बच्चे ।

कवि प्रकृति, परिवेश समाज व ग्रामीण जन-जीवन में गरीब, दलित, शोषित पीड़ित, वंचित व कृषकों की वस्तु स्थिति देखकर चिंचित हो उठता है।

बादल बरसे मूसलधार चरवाह आमों के नीचे खड़ा

किसी को रहा पुकार एक रस जीवन पावस अपरम्पार

इनके मन में कचौह उत्पन्न होती है तब व्यग्योक्ति में कह देते है और ग्रामीण गरीब की आंतरिक वेदना को प्रस्तुत कर सच्ची हिमायत करते हैं ।

6. रामविलास शर्मा:- शर्मा जनसाधारण की धरोहर मानकर कविता को बन्द कारागार का दर्जा देते हैं । चाहे वे किसान के जीवन से परिचय कराये किसी आधुनिक नगर का वर्णन करें, किसी कवि की प्रशस्ति लिखें । प्राचीन संस्कृति के किसी नग्न

प्रतीक नग्न रूप दिखायें या फिर प्रकृति पर ही दृष्टि डालें उनका यह दृष्टिकोण वर्ण्य विषय को अपने अनुकूल ढालने में कभी नहीं चूकता '43' का अकाल हो या '47' का हत्याकाण्ड सावचेत चित्र हो या खुजराहो की मूर्तियां, बैसवाड़े का जीवन हो या द्वारा शिकाहे की मृत्यु का प्रसंग सभी कहीं कवि अपने काम की सामग्री ढूंढ लेता है। निश्चित रूप से यह दृष्टिकोण साम्यवादी या प्रगतिवादी हैं। कविता को जनसाधारण की धारोहर मानने वाले प्रयोगवादी कवि है शर्मा । प्रगतिशील विचारधारा से अभिप्रेत आधुनिक यथार्थ बोध युक्त विचारधारा के अंश छायावादी पलायन वृत्ति के समान स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है । कवि एक और तो प्रगति की बात करते है वहीं नतमस्तक होकर चलने की भी बात करते है ।

बढ़ूंगां आगे और

शांत होगा जब विष वातावरण

अथवा या शीश झुका

खड़ा हुआ अचल एकांत स्थल पर

देखूंगा भस्मसात, होती है कैसे वह अन्तर्ज्योति

पाता है यह जय कैसे

मानव पर यह विकृत प्रकृति का तुफान

शर्मा का भाव शोषितों, दलितों, वंचितों के प्रतिहितों की रक्षा करने का हैं । इनके संकट मोचन बनकर असंतोष की बीजारोपण क्रांति के स्वर कविता के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं:-

कु संस्कृत भूमि ये किसान की,

धरती के पुत्र की,

जितनी है गहरी दो चार बार दस बार

बोना महातिक वहां बीज असन्तोष का

काटती है नये साल फागुन में फसल जो क्रांति की ।

कुल मिलाकर डॉ. शर्मा के काव्य का विहगंम स्वरूप छायावादी काव्य-धारा के इर्द-गिर्द ही दिखाई देता है । यदा कदा आधुनिक पुर रखने का प्रयास करता है किन्तु परातन का मोह नहीं छोडपाते है । प्रथम तारसप्तक के कवियों से भिन्न विचारधारा स्पष्ट परिलक्षित होती है । इसकी आशंका स्वयं रामविलास जी को भी है । तारसप्तक में मेरी कविताओं का संकलन से काव्य के कुछ इतिहासकारों को वर्गीकरण सम्बन्धित कठिनाई का अनुभव हुआ है । इसके लिए में उनके प्रति हार्दिक सहानुभूति विज्ञापित करता हूं ।

7.सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय:-

प्रयोगशीलता अज्ञेय के काव्य का प्रभाव है। व्यक्ति सत्य से व्यापक सत्य की धारा को निरन्तर प्रवाहित करने की प्ररेणा देते है। कवि स्वयं में 'वक्तव्य' की सार्थकता कि हामी नहीं भरते वे कविता की परम्परा का कवि वक्तव्य मानते हैं, किन्तु मानव जीवन के कवाि्स के साथ-साथ उसकी जटिलता इतनी बढी है कि इस प्रकार का आत्म-स्पष्टीकरण वाच्छनीय हो गया है। कवि आधुनिक युग के साधारण व्यक्ति को यौन वर्जनाओं का पुंज कहते हैं । उसका जीवन दो बिन्दुओं के बीच में प्रवाहित हो रहा है। प्रतिकार्थ यौन संयोजन सुन्दर प्रस्तुत है 'प्रतीकार्थ रखते हैं ओसो से लगा घिर गया नभ, उमड़ आये मेघ काले, भूमि के कम्पित उरोजों पर झुका-सा विषद, खां साहत, चिन्तातुर छा गया इन्द्र का नील वक्षग्रज सा यदि तोडने से झुलसा हुआ सा ।" कवि का रूझान यथार्थ बोधजन्म वर्जनाओं में अतियथार्थ की और रूझान दिखाई देता है। उतस बहुनारी के लिए भावावेश दृष्टव्य है।

आह मेरा खास है उतस

धमनियों में आयी है लहु की धारा

प्यार है अभीभिस

तुम कहां हो नारी ?

आगे देखो – वासना के पंक सी फेली हुई थी

धारयित्री सत्य सी निर्लज्ज नंगी

औ ! समर्पित।"[2]

कवि अज्ञेय तीनों तारसप्तकों के सम्पादकत्व में प्रयोगशीलता व्यक्ति सत्य और व्यापक सत्य के रूप में परिणीत, शब्द की अर्थक्ता नव साधारणीकरण अहं की उत्कृष्टता, आत्मभिव्यक्ति, यौनवर्जनाओं का पूंजीभूत रूप, आंतरिक संघर्ष, की तीव्रता नवचेतना, वर्गहीनता, व्यक्तिचैतना वर्गचेतना, से जनीत अर्न्तद्वंद, यथार्थ दर्शन, कुण्ठाग्रस्त, जीवन दर्शन अतियथार्थ, प्रेम का परम्परित स्वरूप, दूहरा बोध द्विविध, व्यक्तित्व आधुनिक बोध से सम्बन्धित है । इस प्रकार दुसरे सप्तक में प्रगतिशिल विचार बोध सूक्ष्मानुभूति तथा बौद्धिकता और कुठग्रास्त अर्ध समाजोन्मुखी अर्थव्यक्तिवादी कवियों जैसी शैली के प्रयोग माथुर आदि ने सम्यक स्वरूप दर्शाया है ।

तकिए के बीच में पढ़ाया लखा बल

प्रिये तेरे वियोग में मुझे डस रहा है ।

केदारनाथ सिंह के काव्य में बिम्बात्मकता नये स्वर कवि की कलात्मकता का परिचय देते हैं। केदार को प्रेम चित्रण में वेग नहीं हैं, उसकी प्रेम-पौथी में मनहूस पन्नों की संख्या ही अधिक है। कुंवरनारायण की उदारता, सहिष्णुता की मनोवृत्ति है । वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कवि है। इनकी वैज्ञानिकता श्लाघनीय है । कवि का तार्त्पय उस बौद्धिक स्वतंत्रता से है जो सदा से जीवन के प्रति निडर और अन्वेषी प्रश्न उठाती रही है। विचारों की प्रधानता कविता का संगठन व प्रयोग प्रमुख विचार है। आस्थावादी कवि के रूप में विजय देव नारायण साही का नाम तारसप्तक की तृतीय श्रृंखला के कवियों में लिया जाता है।

वस्तुत स्वप्न, रूदन और वेदनानुभूति इनकी कविताओं में सर्वत्र स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है इनके गीतों में अटपटी सी छअपटाहट दिखाई देती है ।

तारसप्तक के समग्र काव्य में वैचारिक उत्तेजना और प्रतिक्रियाओं के दर्शन होते है। इनके काव्य में जीर्ण-शीर्ण परम्पराओं का विरोध, विघटन, सहानुभूति का अभाव असंतोष सामुहिक कल्याण की व्यापक संवेदना लोकस्पर्श करने लगती है। इस प्रकार प्रांरभ के सप्तकों से अंतिम सप्तक के बीच छायावाद का मूर्तरूप, प्रगतिवादी विचारधारा प्रयोगवादी नये प्रयोगों के बीच नयी कविता ने ही साठोत्तरी हिन्दी कविता को जन्म दिया।

संदर्भ सूची

1. तारसप्त की भूमिका (प्रथम) पृ. 11
2. मुक्तिबोध तारसप्तक वकतव्य पृ. 43
3. मुक्तिबोध व्यक्तित्व और खण्डहर पृ. 71
4. नेमीचंद जैन, उन्मुख पृ. 29-30
5. अनजान चुपचाप पृ. 17
6. वही पृ. 16,17.18
7. भारत-भूषण अग्रवाल-प्रत्युषबेला पृ.107
8. डा. रामविलास शर्मा, तूफान के समटा पृ.266
9. डा. रामविलास शर्मा, कार्यक्षेत्र पृ. 232
10. डा. श्याम परमार, अकविता और कलां सन्दर्भ पृ. 128

Corresponding Author
* **डॉ. पूरणमल वर्मा,**
आचार्य हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, टोंक
Email- Email-verma.puru999@gmail.com, Mobile- 8239999466